IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, December 2022
Impact Factor: 6.252

महामानव स्वामी विवेकानन्द : प्रथम सांस्कृतिक राजदूत

डॉ. संजीव कुमार पाण्डेय
प्रभारी प्राचार्य एवं सहायक प्राध्यापक (विधि)
संस्कार विधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपपुर (म.प्र.)

शोध सारांश : भारत की पुण्यभूमि में समय–समय पर महापुरुषों ने जन्म लेकर सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की दिशा में अप्रतिम योगदान दिये हैं। कालजयी एवं प्रस्थानत्रयी ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि **धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे, युगे।** (गीता 4/8) अर्थात् धर्म की स्थापना के लिए मैं युग–युग में आता हूँ और जन्म लेता हूँ। स्वामी विवेकानन्द के जीवन मूल्यों पर आधारित शोध पत्र लिखने का एक अनुपम प्रयास है।

मुख्य शब्द : महामानव, स्वामी विवेकानन्द, प्रथम सांस्कृतिक, राजदूत, गौरवशाली, सनातन संस्कृति ख्यातिलब्ध, कुशाग्रबुद्धि आदि।

प्रस्तावना:

भारत की गौरवशाली सनातन संस्कृति को सम्पूर्ण विश्व में आलोकित करने एवं सर्वोच्च पायदान पर स्थापित करने हेतु ओजस्वी एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी नरेन्द्र देव का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता में हुआ। इनके पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता उच्च न्यायालय में ख्यातिलब्ध वकील तथा माँ भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों में अटूट आस्था रखती थीं। माँ की आध्यात्मिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति का इन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि के थे तथा परमात्मा को पाने की तीव्र उत्कण्ठा थी। वर्ष 1881 में रामकृष्ण परमहंस से साक्षात्कार के पश्चात् ये सांसारिक जीवन त्याग कर रामकृष्ण परमहंस के परम शिष्य बन गये।

11 सितम्बर 1893 की तिथि भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है क्योंकि इसी तिथि को स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका के शिकागो की धर्म संसद में भारतीय सनातन संस्कृति के बहुआयामी पक्षों को दुनिया के समक्ष रखा था। शिकागो सम्मेलन मूल रूप से कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज के 400 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित किया जा रहा था। सम्मेलन में इतना उत्साह था कि अमेरिका के चार शहरों में प्रतियोगिता के पश्चात् शिकागो को यह सौभाग्य मिला था। यात्रा के दौरान जमशेद जी टाटा से मुलाकात हुई तथा स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा से ही जमशेद टाटा ने विश्वविख्यात इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस की स्थापना की थी। शिकागो पहुँचने पर विवेकानन्द को जानकारी प्राप्त हुई कि धर्म संसद में भाग लेने के लिए उन्हें आधिकारिक अनुमति नहीं मिली है। वहाँ से बोस्टन पहुँचे जहाँ हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जान हेनरी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, December 2022
Impact Factor: 6.252

राइट ने विश्वविद्यालय में भाषण देने के लिए विवेकानन्द को आमंत्रित किया। जान राइट विवेकानन्द के भाषण से बहुत अधिक प्रभावित हुए तथा धर्म संसद में अनुमति के संबंध में कहा कि ''आपका परिचय माँगना ठीक उसी प्रकार है जैसे सूर्य से स्वर्ग में चमकने के लिए उसके अधिकार का सबूत माँगना है।''

11 सितम्बर 1893 को स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिकागो में अपने भाषण की शुरुआत ''मेरे प्रिय अमेरिकी भाइयों और बहनों'' से करते ही पूरा स्थल तालियों से गूँज उठा। वास्तव में यह भारतीय सनातन संस्कृति की अटूट श्रद्धा **''वसुधैव कुटुम्बकम''** एवं ''**सर्वधर्म समभाव**'' के फलस्वरूप ही सम्भव हो पाया था। उन्होंने कहा कि मैं दुनिया की प्राचीनतम संत परम्परा और सभी धर्मों की जननी (भारतीय सनातन संस्कृति) की ओर से तथा सभी जातियों और सम्प्रदायों के लाखों, करोड़ों हिन्दुओं की ओर से आए सभी का आभार व्यक्त करता हूँ। विश्व को भारतवर्ष से दूसरों के धर्म के प्रति सहिष्णुता की ही नहीं, दूसरों के धर्म के साथ सहानुभूति रखने की भी शिक्षा ग्रहण करनी होगी। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ जिसने सम्पूर्ण विश्व को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं रखते अपितु हम सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करते हैं। मैं उस देश से हूँ जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के सताए गए लोगों को अपने यहाँ शरण दी है। उन्होंने साम्प्रदायिकता और कट्टरता का पुरजोर विरोध करते हुए इसे समूल नष्ट करने का सभी से आह्वान किया। स्वामी विवेकानन्द ने अपने भाषण में एक श्लोक की कुछ पंक्तियां उद्धृत करते हुए कहा कि यह मैं बचपन से ही स्मरण करते और दुहराते आया हूँ–

''**रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम।**

नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।'' (शिवमह्निः स्त्रोत 7)

अर्थात् जिस प्रकार अलग–अलग स्रोतों से निकली विभिन्न नदियाँ अंत में समुद्र में जाकर मिलती हैं, उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा के अनुरूप अलग–अलग मार्ग चुनता है। वे देखने में भले ही सीधे या टेढ़े–मेढ़े लगे, पर सभी ईश्वर तक ही जाते हैं। यह सभा जो अभी तक आयोजित सर्वाधिक पवित्र सभाओं में से एक है। वह स्वतः ही गीता के अद्भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत के प्रति उसकी घोषणा करती है–**ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।** अर्थात् जो कोई मेरी ओर आता है, चाहे वह कैसा भी हो, मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न–भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अंत में मेरी ओर पहुँचते हैं। शिकागो में अपने प्रवास के दौरान स्वामी विवेकानंद ने तीन महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार प्रकट किये। पहला, भारतीय परंपरा केवल सहिष्णुता ही नहीं बल्कि सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करने में विश्वास रखती है। दूसरा, उन्होंने स्पष्ट और मुखर शब्दों में इस बात पर बल दिया कि बौद्ध धर्म के बिना हिंदू धर्म और हिंदू धर्म के बिना बौद्ध धर्म अपूर्ण है। तीसरा, यदि कोई व्यक्ति केवल अपने धर्म के अनन्य अस्तित्व और दूसरों के धर्म के विनाश का स्वप्न रखता है तो मैं हृदय की अतल गहराइयों से उसे दया भाव से देखता हूँ और उसे इंगित करता हूं कि विरोध के बावजूद प्रत्येक धर्म के झंडे पर शीघ्र ही संघर्ष के बदले सहयोग, विनाश के बदले सम्मिलन और मतभेद के बजाय सद्भाव व शांति का संदेश लिखा होगा।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, December 2022
Impact Factor: 6.252

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि सत्य को हजार तरीकों से बताया जा सकता है फिर भी हर एक सत्य ही होगा। ऋग्वेद (1/164/46) में वर्णित है कि **"एकं सद्विप्रा बहुधा वदंति"** अर्थात् सत्ता एक मात्र है, पण्डित लोग उसी एक सत्ता का तरह–तरह से वर्णन करते हैं। ज्ञान के बारे में उन्होंने कहा था कि ज्ञान स्वयमेव वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है। अनुभव को जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक बताया। भाग्य, बहादुर ओर कर्मठ व्यक्ति का ही साथ देता है। हर काम को तीन अवस्थाओं से गुजरना होता है – उपहास, विरोध और स्वीकृति। जो मनुष्य अपने समय से आगे विचार करता है, लोग उसे निश्चय ही गलत समझते हैं।

इसलिए विरोध और अत्याचार हम सहर्ष स्वीकार करते हैं, परन्तु मुझे दृढ और पवित्र होना चाहिए और ईश्वर में अपरिमित विश्वास रखना चाहिए, तब ये सब लुप्त हो जायेंगे। शिक्षा के सम्बन्ध में उनका मानना था कि इस हेतु मन की एकाग्रता, चरित्र गठन, व्यक्तित्व विकास, प्रबल आत्मविश्वास, श्रद्धा एवं वेदांत का समावेश आवश्यक है। शिक्षा का अर्थ उस पूर्णता को व्यक्त करना है जो सभी मनुष्यों में पहले से विद्यमान है। शिक्षा का सार मन की एकाग्रता प्राप्त करना है, तथ्यों का संकलन नहीं। जो शिक्षा व्यक्ति को जीवन–संग्राम में समर्थ नहीं बना सकती, जो मनुष्य में चरित्र–बल, परहित– भावना तथा सिंह के समान साहस नहीं ला सकती, वह शिक्षा नहीं है। शिक्षा का तात्पर्य यह है कि जिस शिक्षा से हम अपना जीवन–निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र–गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वही वास्तव में शिक्षा है। वेदान्त का सिद्धान्त है कि मनुष्य के भीतर एक अबोध शिशु में भी ज्ञान का समस्त भण्डार निहित है, केवल उसके जागृत होने की आवश्यकता है, और यही आचार्य का काम है।

विवेकानन्द ने युवाओं का आह्वान करते हुए कठोपनिषद् के एक मंत्र को उद्धृत करते हुए कहा था कि **"उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरानिबोधत।"** अर्थात् उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक कि अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच जाओ। युवाओं के उचित मार्गदर्शन के लिए आवश्यक है कि उनकी क्षमता का सदुपयोग किया जाय। युवाओं को राष्ट्र निर्माण के कार्य में लगाया जाना चाहिए। युवा इस श्रेष्ठ कार्य में अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार अपनी सहभागिता कर सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्र के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। स्वामी जी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से शिक्षा, ज्ञान एवं धन अर्जित करने का प्राकृतिक अधिकार होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति में मानव गरिमा तथा सम्मान की भावना जैसे गुणों का विकास होना चाहिए।

स्वस्थ्य एवं सम्पन्न व्यक्ति से एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण होगा। उन्होंने कहा था कि मैं चाहता हूँ कि मेरे सब बच्चे, मैं जितना उन्नत कर सकता था, उससे सौगुना उन्नत बनें। तुम लोगों में से प्रत्येक को महान शक्तिशाली बनना होगा, मैं कहता हूँ, अवश्य बनना होगा। आज्ञा–पालन, ध्येय के प्रति अनुराग तथा ध्येय को कार्यरूप में परिणत करने के लिए सदा प्रस्तुत रहना, इन तीनों के रहने पर कोई भी तुम्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकता। लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हों या न हों,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, December 2022
Impact Factor: 6.252

तुम्हारा देहान्त आज हो या एक युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो। पवित्रता, धैर्य तथा प्रयत्न के द्वारा सारी बाधाएँ दूर हो जाती हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि महान कार्य सभी धीरे–धीरे होते हैं। उन्होंने राष्ट्र के नागरिकों को देशभक्त बनने का आह्वान किया तथा कहा कि जिस जाति ने अतीत में हमारे लिए इतने बड़े–बड़े काम किये हैं उसे प्राणों से भी अधिक प्यारी समझो। हे स्वदेशवाशियों! मैं संसार के अन्यान्य राष्ट्रों के साथ अपने राष्ट्र की जितनी ही अधिक तुलना करता हूँ, उतना ही अधिक तुम लोगों के प्रति मेरा प्यार बढ़ता जाता है। तुम लोग शुद्ध, शान्त और सत्स्वभाव हो और तुम्हीं लोग सदा अत्याचारों से पीड़ित रहते आये हो–इस मायामय जड़ जगत् की पहेली ही कुछ ऐसी है।

इस प्रकार से निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि–स्वामी विवेकानन्द महान कर्मयोगी, विराट व्यक्तित्व के धनी तथा सनातन संस्कृति के सच्चे उपासक थे। शिकागो के विश्वधर्म संसद में राष्ट्र के धार्मिक तथा आध्यात्मिक पक्षों पर सम्पूर्ण विश्व के समक्ष भारतीय सनातन संस्कृति के गौरवशाली इतिहास की श्रेष्ठता स्थापित की। अल्पायु में सम्पूर्ण विश्व को अपने ज्ञान के प्रकाशपुंज से आलोकित करने वाले स्वामी विवेकानन्द महामानव तथा प्रथम सांस्कृतिक राजदूत थे। प्रतिभा एवं आदर्श जिसके क्रमशः धरोहर एवं अनुगामी होते हैं तथा ज्ञान, विवेक और संयम जिसकी पूजा करते हैं, वह विनयशील व्यक्तित्व युगपुरुष महामनाव, भारतीय संस्कृति के पुरोधा स्वामी विवेकानंद थे। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व समस्त मानव जगत के लिए वन्दनीय एवं अनुकरणीय है।

संदर्भ स्रोतः

[1]. गीता 4/8

[2]. शिवमह्मिनः स्त्रोत 7

[3]. ऋग्वेद 1/164/46

[4]. बी.एल. फड़िया,